एम.एच.डी.–23 : मध्ययुगीन कविता–1
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–23
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.–23/टी.एम.ए./2024–25
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X4 = 40

(क) राजा गियँ कै सुनहु निकाई। जनु कुम्हार धरि चाक फिराई।।
भोंगत नारि कचौरा लावा। पीत निरातर गहि दिखरावा।।
देव सराहँहि (तैसो) गोरी। गियँ उँचार गह लिहसि अजोरी।।
अस गियँ मनुसँहि दीख न काहू। ठास धरा जनु चलै कियाहू।।
का कहुँ असकै दयी सँवारीं। को तिह लाग दयि अँकवारी।।

(ख) जा कारण मैं दौर्यो फिरतो, सो अब घट में आई।
पाँचों मेरी सखी सहेली, तिनि निधि दई दिखाई
अब मन फूलि भयो जग महियाँ, आप में उलटि समाई।।
चलत चलत मेरो मन थाक्यो, मो पै चल्यो न जाई।
साँई सहज मिल्यो सोई सन्मुख, कह रैदास बताई।।

(ग) रुकमिनि राधा ऐसैं भेंटी।
जैसैं बहुत दिननि की बिछुरी, एक बाप की बेटी।।
एक सुझाव एक वय दोऊ, दोऊ हरि कौं प्यारी।
एक प्रान मन एक दुहुनि कौ, तन करि दीसति न्यारी।।
निज मंदिर लै गई रुकमिनी, पहुनाई बिधि ठानी।
सूरदास प्रभु तहँ पग धारे, जहँ दोऊ ठकुरानी।।

(घ) प्रान वही जु रहैं रिझि वापर रूप वही लिहिं वाहि रिझायो।
सीस वही जिन वे परसे पद, अंक वही जिन वा परसायो।।
दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।
और कहाँ लौं कहों रसखानि री भाव वही जु वही मनभायो।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500–500 शब्दों में दीजिए : 15X3 = 45

(क) सगुण काव्यधारा के प्रमुख पारिभाषिक शब्दों पर प्रकाश डालिए।
(ख) 'चंदायन' में अभिव्यक्त लोकजीवन के विविध रूपों का विवेचन कीजिए।
(ग) भक्तिकालीन प्रमुख कृष्णभक्त कवियों का परिचय दीजिए।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : 5X3 = 15

(क) भ्रमरगीत
(ख) रसखान के काव्य में भक्ति
(ग) रविदास के काव्य में 'जीव' का स्वरूप

एम.एच.डी.-23: मध्ययुगीन कविता-1

पाठ्यक्रम कोड: एम.एच:डी:-23
सत्रीय कार्य कोड: एम.एचडी:-23/टी.एम.ए./2024-25
कुल अंक: 100

अस्वीकरण/विशेष नोट: ये सत्रीय कार्य में दिए गए कुछ प्रश्नों के उत्तर/समाधान के नमूने मात्र हैं। ये नमूना उत्तर/समाधान निजी शिक्षक/शिक्षक/लेखकों द्वारा छात्र की सहायता और मार्गदर्शन के लिए तैयार किए जाते हैं ताकि यह पता चल सके कि वह दिए गए प्रश्नों का उत्तर कैसे दे सकता है। हम इन नमूना उत्तरों की 100% सटीकता का दावा नहीं करते हैं क्योंकि ये निजी शिक्षक/शिक्षक के ज्ञान और क्षमता पर आधारित हैं। सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर तैयार करने के संदर्भ के लिए नमूना उत्तरों को मार्गदर्शक/सहायता के रूप में देखा जा सकता है। चूंकि ये समाधान और उत्तर निजी शिक्षक/शिक्षक द्वारा तैयार किए जाते हैं, इसलिए त्रुटि या गलती की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। किसी भी चूक या त्रुटि के लिए बहुत खेद है, हालांकि इन नमूना उत्तरों / समाधानों को तैयार करते समय हर सावधानी बरती गई है। किसी विशेष उत्तर को तैयार करने से पहले और अप-टू-डेट और सटीक जानकारी, डेटा और समाधान के लिए कृपया अपने स्वयं के शिक्षक/शिक्षक से परामर्श लें। छात्र को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई आधिकारिक अध्ययन सामग्री को पढ़ना और देखना चाहिए।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

(क) राजा गियँ कै सुनहु निकाई। जनु कुम्हार धरि चाक फिराई।।
भोंगत नारि कचौरा लावा। पीत निरातर गहि दिखरावा।|
देव सराहँहि (तैसों) गोरी। गियँ ऊँचार गह लिहसि अजोरी।।
अस गियेँ मनुसँहि दीख न काहू। ठास घरा जनु चलै कियाहू।।
का कहूँ असके दयी सँवारीं। को तिह लाग दयि अँकवारी ||

पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या

यह पद्यांश हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि तुलसीदास की रचनाओं में से एक प्रतीत होता है। इसमें कुम्हार और उसके चाक का संदर्भ, भोंगत नारियों, और देवी-देवताओं की चर्चा की गई है। चलिए, इसे क्रमबद्ध तरीके से समझते हैं:

संदर्भ

यह पद्यांश समाज की विविधताएँ और जीवन की जटिलताओं को दर्शाता है। इसमें मुख्यतः कुम्हार की भूमिका, नारियों का स्थान, और देवताओं की स्तुति की गई है। यह उस समय की सांस्कृतिक परंपराओं और मान्यताओं को भी उजागर करता है।

व्याख्या

1. **"राजा गियँ कै सुनहु निकाई।"**
   - राजा का उल्लेख यहाँ राजसी गरिमा और शक्ति का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि राजा ने अपनी प्रजा के कल्याण के लिए किसी विशेष बात को सुना या समझा है।

2. **"जनु कुम्हार धरि चाक फिराई।।"**
    - कुम्हार अपने चाक पर मिट्टी को आकार दे रहा है, जो जीवन के निर्माण और रूपांतरण का प्रतीक है। यह संकेत करता है कि जैसे कुम्हार मिट्टी को नई आकृति देता है, वैसे ही राजा या नेता समाज को नया दिशा दे सकता है।
3. **"भोंगत नारि कचौरा लावा।"**
    - भोंगत नारियों का उल्लेख यहाँ पर विशेष सामाजिक स्थिति को दर्शाता है। कचौरा लाना एक अनुष्ठानिक क्रिया है, जो पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत करने का कार्य करती है।
4. **"पीत निरातर गहि दिखरावा।"**
    - यहाँ "पीत" का रंग सुख और समृद्धि का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि जीवन में निरंतरता और रंगीनता होनी चाहिए।
5. **"देव सराहँहि (तैसों) गोरी।"**
    - देवी-देवताओं की स्तुति का उल्लेख यहाँ पर किया गया है। यह दर्शाता है कि समाज की आध्यात्मिकता और धार्मिकता जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।
6. **"गियँ ऊँचार गह लिहसि अजोरी।।"**
    - यह पंक्ति दर्शाती है कि लोग आध्यात्मिक ज्ञान के लिए संघर्ष कर रहे हैं और इसे प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।
7. **"अस गियेँ मनुसँहि दीख न काहू।"**
    - यहाँ यह बताया गया है कि ऐसे लोग समाज में दिखाई नहीं देते हैं, जो वास्तव में मूल्यवान और गुणी होते हैं।
8. **"ठास घरा जनु चलै कियाहू।।"**
    - यह पंक्ति समाज के ठोस आधार और स्थिरता की बात करती है, जहाँ सच्चाई और नैतिकता का पालन होता है।
9. **"का कहूँ असके दयी सँवारीं।"**
    - यह प्रश्न उठाता है कि ऐसे सच्चे और अच्छे लोगों की चर्चा क्यों नहीं की जाती।
10. **"को तिह लाग दयि अँकवारी ॥"**
    - अंत में यह व्यक्त किया गया है कि जिन लोगों में सच्चाई और दया होती है, उनकी समाज में कोई पहचान नहीं होती।

निष्कर्ष

यह पद्यांश जीवन की वास्तविकताओं, मानवीय गुणों, और समाज की जटिलताओं को गहराई से दर्शाता है। यह हमें यह समझने का प्रयास करता है कि सच्चे और गुणी लोग अक्सर अदृश्य होते हैं, जबकि उनके कार्य और योगदान समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। यह कुम्हार की भांति समाज को आकार देने के लिए आवश्यक होता है कि हम सच्चाई और नैतिकता को अपनाएँ।

(ख) जा कारण मैं दौरयो फिरतो, सो अब घट में आई।
पाँचों मेरी सखी सहेली, तिनि निधि दई दिखाई
अब मन फूलि भयो जग महियाँ, आप में उलटि समाईं।।
चलत चलत मेरो मन थाक्यो, मो पै चल्यो न जाई।
साई सहज मिल्यो सोई सन्मुख, कह रैदास बताई ।।

यह पद्यांश संत रविदास का है, जिसमें उन्होंने अपने भीतर के आत्मबोध और दिव्य अनुभूति का वर्णन किया है। चलिए, पद्यांश की पंक्तियों को समझते हुए उसकी संदर्भ सहित व्याख्या करते हैं।

संदर्भ:

संत रविदास 15वीं सदी के महान संत, कवि और समाज सुधारक थे। वे भक्ति आंदोलन के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। उनके पद और दोहे सरल भाषा में होते थे, जिनमें जीवन की गूढ़ सच्चाइयाँ छिपी होती थीं। उनके काव्य में ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम, समर्पण और समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति विरोध झलकता है। प्रस्तुत पद्यांश में आत्मानुभूति, आत्मबोध और ईश्वर की प्राप्ति की चर्चा है।

व्याख्या:

पंक्ति 1: जा कारण मैं दौरयो फिरतो, सो अब घट में आई।

इस पंक्ति में संत रविदास कहते हैं कि जिस कारण वे इधर-उधर भटकते रहे, वह कारण अब उनके भीतर आ गया है। यहाँ "घट" का अर्थ हृदय या आत्मा से है। वे बताते हैं कि बाहरी दुनिया में जिस ईश्वर को वे खोजते रहे, वह अब उनके अपने भीतर ही मिल गया है।

पंक्ति 2: पाँचों मेरी सखी सहेली, तिनि निधि दई दिखाई।

यहाँ "पाँचों सखी सहेली" का तात्पर्य पंच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) से है। संत रविदास कहते हैं कि इन पांच तत्वों ने उन्हें तीन निधियाँ (सत्य, ज्ञान, आनंद) दिखाई। यह दर्शाता है कि जब व्यक्ति पंच तत्वों को सही ढंग से समझ लेता है, तो उसे आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

पंक्ति 3: अब मन फूलि भयो जग महियाँ, आप में उलटि समाईं।

इस पंक्ति में संत रविदास बताते हैं कि आत्मज्ञान की प्राप्ति से उनका मन आनंदित हो गया है। "फूलि" का अर्थ फूलने या आनंद से है और "आप में उलटि समाईं" का अर्थ है स्वयं में लौटकर समा जाना। यहाँ वे बताते हैं कि आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद उनका मन बाहरी दुनिया से हटकर अपने भीतर की ओर लौट आया है और उनमें समा गया है।

पंक्ति 4: चलत चलत मेरो मन थाक्यो, मो पै चल्यो न जाई।

संत रविदास कहते हैं कि लगातार भटकते-भटकते उनका मन थक गया है। वे अब और आगे नहीं चल सकते। यह भटकाव जीवन के विविध अनुभवों और संघर्षों का प्रतीक है, जिससे उनका मन थक चुका है और अब वे अंततः स्थिरता की ओर अग्रसर होना चाहते हैं।

पंक्ति 5: साई सहज मिल्यो सोई सन्मुख, कह रैदास बताई।

अंतिम पंक्ति में संत रविदास कहते हैं कि साई अर्थात ईश्वर सहज ही मिल गया, वह उनके सन्मुख अर्थात सामने आ गया। यह दिखाता है कि जब व्यक्ति का मन स्थिर और शुद्ध हो जाता है, तब ईश्वर की प्राप्ति सहज रूप से होती है। संत रविदास इस आत्मबोध की स्थिति को बताते हुए हमें संदेश देते हैं कि ईश्वर की खोज बाहरी दुनिया में नहीं, बल्कि अपने भीतर ही की जानी चाहिए।

निष्कर्ष:

संत रविदास का यह पद्यांश आत्मज्ञान और ईश्वर प्राप्ति की प्रक्रिया को सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत करता है। वह हमें यह सिखाते हैं कि बाहरी दुनिया में भटकने से कुछ नहीं मिलता, वास्तविक आनंद और शांति अपने भीतर ही छिपी होती है। जब व्यक्ति पंच तत्वों को समझ लेता है और अपने भीतर की यात्रा करता है, तब उसे सच्चा ज्ञान, सत्य और आनंद की प्राप्ति होती है। यह आत्मज्ञान ही ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग है, जो संत रविदास ने अपने अनुभवों के माध्यम से हमें बताया है।

संत रविदास के इस पद्यांश की व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि उनकी काव्य रचनाएँ हमें जीवन की गूढ़ सच्चाइयों से अवगत कराती हैं और आत्मबोध की ओर प्रेरित करती हैं।

(ग) रुकमिनि राधा ऐसे भेंटी।
जैसे बहुत दिननि की बिछुरी, एक बाप की बेटी ||
एक सुझाव एक वय दोऊ, दोऊ हरि कौ प्यारी।
एक प्रान मन एक दुहुनि कौ, तन करि दीसति न्यारी ||
निज मंदिर लै गई रुकमिनी, पहुनाई बिधि ठानी।
सूरदास प्रभु तहँ पग धारे, जहँ दोऊ ठकुरानी।।

संदर्भ:

यह पद्यांश सूरदास की रचनाओं में से एक है, जो भक्ति साहित्य के प्रमुख कवियों में से एक हैं। सूरदास ने भगवान श्री कृष्ण की लीला और भक्ति को अपने पदों में समेटा है। इस पद्यांश में

रुक्मिनि और राघव (श्री कृष्ण) के बीच के संबंधों और रुक्मिनि के भावनात्मक संघर्ष को दर्शाया गया है। रुक्मिनि की पीड़ा, प्रेम और भक्ति की गहराई इस रचना में विशेष रूप से उभरी हुई है।

व्याख्या:

1. **"रुकमिनि राघा ऐसे मेंटी।"**
   - इस पंक्ति में रुक्मिनि की स्थिति का उल्लेख किया गया है। वह राघव (श्री कृष्ण) के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हैं। "मेंटी" से तात्पर्य है कि रुक्मिनि की प्रेम की स्थिति एक अद्वितीय और गहन है।
2. **"जैसे बहुत दिननि की बिछुरी, एक बाप की बेटी॥"**
   - यहाँ रुक्मिनि की स्थिति का तुलना एक बिछड़ी हुई बेटी से की गई है। यह भावनात्मक दूरी और उनके परिवार के बीच के संबंधों को दर्शाता है। जैसे बिछड़ी हुई बेटी अपने परिवार को याद करती है, उसी तरह रुक्मिनि अपने प्रिय को याद कर रही हैं।
3. **"एक सुझाव एक वय दोऊ, दोऊ हरि कौ प्यारी।"**
   - इस पंक्ति में यह बताया गया है कि रुक्मिनि और राघव दोनों एक-दूसरे के लिए प्यारे हैं। उनके प्रेम में एकता और समर्पण का भाव प्रकट होता है। "एक सुझाव" का अर्थ है एकता की भावना।
4. **"एक प्रान मन एक दुहुनि कौ, तन करि दीसति न्यारी॥"**
   - यहाँ यह कहा गया है कि रुक्मिनि और राघव का मन और प्राण एक-दूसरे में समाहित हैं। "तन करि दीसति न्यारी" का मतलब है कि उनका तन भी एक-दूसरे के लिए विशेष है। यह प्रेम का गहरा भाव दर्शाता है।
5. **"निज मंदिर लै गई रुकमिनी, पहुनाई बिधि ठानी।"**
   - इस पंक्ति में रुक्मिनि अपने प्रिय को अपने मंदिर में आमंत्रित करती हैं, जैसे कोई मेहमान। "पहुनाई बिधि ठानी" का अर्थ है कि रुक्मिनि ने विशेष तैयारी की है, जो उनके प्रेम को और भी गहरा बनाता है।
6. **"सूरदास प्रभु तहँ॑ पग धारे, जहँ दोऊ ठकुरानी।"**
   - सूरदास यहाँ स्वयं को दर्शाते हैं कि वे प्रभु श्री कृष्ण के चरणों में सन्नद्ध हैं। "दोऊ ठकुरानी" का मतलब है कि रुक्मिनि और श्री कृष्ण दोनों ही एक-दूसरे के प्रति अति समर्पित हैं।

निष्कर्ष

इस पद्यांश में रुक्मिनि की प्रेम भक्ति और राघव के प्रति उसकी समर्पण भावना को गहराई से व्यक्त किया गया है। रुक्मिनि का मन और प्राण दोनों ही श्री कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम से भरे हुए हैं। सूरदास की यह रचना भक्ति साहित्य की एक अनमोल कड़ी है, जो प्रेम और समर्पण की अमिट छवि प्रस्तुत करती है।

(घ) प्रान वही जु रहैं रिजि वापर रूप वही लिहिं वाहि रिझयो।
सीस वही जिन वे परसे पद, अंक वही जिन वा परसायो।।
दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।
और कहाँ लौं कहों रसखानि री भाव वही जु वही मनमायो।।

संदर्भ

यह पद्यांश भारतीय भक्ति काव्य परंपरा के प्रमुख कवि रसखान की रचनाओं से लिया गया है। रसखान, जो कि मुस्लिम थे, ने अपनी रचनाओं में कृष्ण भक्ति का गहरा प्रभाव दिखाया है। यह पद्यांश उनके प्रेम और भक्ति को दर्शाता है, जो कृष्ण के प्रति अत्यधिक समर्पित है।

व्याख्या

यह पद्यांश चार पंक्तियों में विभाजित है, जिसमें रसखान ने अपने इष्टदेव भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को दर्शाया है।

प्रान वही जु रहैं रिजि वापर रूप वही लिहिं वाहि रिझयो।

रसखान कहते हैं कि वही प्राण (जीवन शक्ति) है जो भगवान श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित है और उन्हीं के रूप को देखकर रिझा हुआ है। यहाँ 'रिजि वापर' का अर्थ है किसी चीज के प्रति आकर्षित होना या प्रेम में पड़ना। रसखान यह स्पष्ट करते हैं कि उनका जीवन केवल श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित है और उन्हीं के रूप से प्रेम करता है।

सीस वही जिन वे परसे पद, अंक वही जिन वा परसायो।।

यहाँ रसखान कहते हैं कि उनका सिर वही है जो श्रीकृष्ण के चरणों को स्पर्श करता है, और उनका अंक (हृदय) वही है जिसमें श्रीकृष्ण ने प्रवेश किया है। इसका अर्थ यह है कि रसखान का शरीर और मन दोनों ही श्रीकृष्ण की सेवा और भक्ति में संलग्न हैं। वे यह बताना चाहते हैं कि उनका सम्पूर्ण अस्तित्व भगवान की भक्ति में लीन है।

दूध वही जु दुहायो री वाही दही सु सही जो वही ढरकायो।

इस पंक्ति में रसखान कहते हैं कि वही दूध है जिसे दुहा गया है, और वही दही है जिसे मथा गया है। यहाँ 'दूध दुहायो' और 'दही ढरकायो' का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार दूध को दुहने और दही को मथने की प्रक्रिया होती है, उसी प्रकार उनका प्रेम और भक्ति भी कृष्ण के प्रति प्रगाढ़ होती है। यह उनके भक्ति भाव की गहराई को दर्शाता है।

और कहाँ लौं कहों रसखानि री भाव वही जु वही मनमायो।।

अंतिम पंक्ति में रसखान कहते हैं कि अब और क्या कहूँ? वही भाव (प्रेम) और वही मनमायो (मन का आकर्षण) है जो भगवान श्रीकृष्ण के प्रति है। यहाँ रसखान यह बताना चाहते हैं कि उनका प्रेम और भक्ति कृष्ण के प्रति इतना गहरा और स्थायी है कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

निष्कर्ष

रसखान का यह पद्यांश कृष्ण भक्ति के प्रति उनके अत्यधिक समर्पण को दर्शाता है। उन्होंने अपने जीवन, मन, और हृदय को पूरी तरह से श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया है। उनका प्रत्येक कार्य, प्रत्येक भाव, और प्रत्येक विचार कृष्ण की भक्ति में ही निहित है। इस प्रकार, रसखान की यह रचना भारतीय भक्ति साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है और यह उनके अनन्य प्रेम और समर्पण का एक अद्वितीय उदाहरण है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500-500 शब्दों में दीजिए:

(क) सगुण काव्यधारा के प्रमुख पारिभाषिक शब्दों पर प्रकाश डालिए।

सगुण काव्यधारा के प्रमुख पारिभाषिक शब्द

सगुण काव्यधारा भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसका अर्थ है "जिसमें ईश्वर का सगुण रूप वर्णित होता है"। इस धारा के अंतर्गत कई प्रमुख पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है, जो सगुण काव्य की संरचना और उसके तत्वों को समझने में सहायक होते हैं।

1. **सगुण**

सगुण का अर्थ है "साकार" या "साक्षात्"। यह शब्द उस ईश्वर या दिव्यता को इंगित करता है, जो गुणों से युक्त है। सगुण ईश्वर की पूजा में भक्त उसकी मूर्ति या चित्र के माध्यम से उसे देखते हैं।

2. **सगुण भक्ति**

सगुण भक्ति उस भक्ति को कहते हैं जिसमें भक्त सगुण रूप में भगवान की आराधना करता है। यह भक्ति भावनाओं, प्रेम और समर्पण पर आधारित होती है। सगुण भक्ति में मनुष्य अपने भावों के माध्यम से ईश्वर से जुड़ता है।

3. **सगुण उपासना**

सगुण उपासना का तात्पर्य है सगुण रूप में ईश्वर की आराधना करना। इसमें विभिन्न प्रकार की पूजा-अर्चना, मंत्रों का उच्चारण और साधना शामिल होती है।

4. **सगुण कविता**

सगुण कविता वह काव्य है जो सगुण तत्वों का प्रतिपादन करती है। इसमें भक्ति, प्रेम, और सामाजिक चिंताओं का समावेश होता है।

5. **राग-रागिनी**

सगुण काव्य में राग और रागिनी का विशेष महत्व होता है। रागों के माध्यम से भावनाओं का संचार किया जाता है, जिससे पाठक या श्रोता को गहन अनुभव होता है।

6. सौंदर्य

सगुण काव्य में सौंदर्य की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ सौंदर्य का तात्पर्य केवल शारीरिक सौंदर्य से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सौंदर्य से भी है। सगुण काव्य में सौंदर्य के माध्यम से ईश्वर की महिमा का वर्णन किया जाता है।

7. भक्ति रस

भक्ति रस वह आनंद है जो भक्त को ईश्वर की भक्ति में मिलता है। यह रस सगुण काव्य का अभिन्न हिस्सा है और इसे भक्तों के अनुभवों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

8. लीला

लीला का अर्थ है "क्रीड़ा" या "खेल"। सगुण काव्य में भगवान की लीलाओं का वर्णन बहुत महत्वपूर्ण है। भगवान की लीलाएं भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत होती हैं और उन्हें भक्ति के मार्ग पर अग्रसर करती हैं।

9. माया

माया का अर्थ है "भ्रम" या "आकर्षण"। सगुण काव्य में माया का उल्लेख उस स्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता है, जिसमें मनुष्य भौतिक दुनिया में उलझा रहता है।

10. ध्यान

ध्यान का तात्पर्य है "मेडिटेशन" या "चिंतन"। सगुण काव्य में ध्यान का महत्व इसलिए है क्योंकि यह भक्त को ईश्वर के करीब लाने में सहायक होता है। ध्यान के माध्यम से भक्त अपने मन को शांत करता है और ईश्वर की ओर अग्रसर होता है।

11. श्रृंगार

श्रृंगार का अर्थ है "सज्जा" या "अलंकरण"। सगुण काव्य में श्रृंगार का प्रयोग ईश्वर के दिव्य रूप को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए किया जाता है। यह भावनाओं की गहराई को व्यक्त करने का एक साधन है।

12. उपदेश

उपदेश का अर्थ है "सीख" या "गुरुदेव का आदेश"। सगुण काव्य में उपदेश का प्रयोग भक्तों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए किया जाता है।

13. काव्यात्मकता

काव्यात्मकता का अर्थ है "कविता की विशेषताएँ"। सगुण काव्य में काव्यात्मकता का उपयोग विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है, जिससे पाठक को एक गहन अनुभव मिलता है।

14. अनुराग

अनुराग का अर्थ है "प्रेम" या "मोह"। सगुण काव्य में अनुराग का विशेष महत्व है क्योंकि यह भक्त के भावनात्मक जुड़ाव को दर्शाता है।

15. प्रभुता

प्रभुता का तात्पर्य है "ईश्वरत्व"। सगुण काव्य में प्रभुता का उपयोग ईश्वर के सर्वोच्च गुणों को दर्शाने के लिए किया जाता है।

निष्कर्ष

सगुण काव्यधारा में ये पारिभाषिक शब्द केवल काव्य की भाषा को समृद्ध नहीं करते, बल्कि इसके अंतर्निहित भाव और भावना को भी स्पष्ट करते हैं। सगुण काव्य के माध्यम से पाठक या श्रोता न केवल ईश्वर के साथ जुड़ता है, बल्कि उसे एक नया दृष्टिकोण और अनुभव प्राप्त होता है। इस प्रकार, सगुण काव्यधारा न केवल धार्मिक आस्था का माध्यम है, बल्कि यह मानव जीवन के गहनतम अनुभवों का भी परिचायक है।

(ख) चंदायन' में अभिव्यक्त लोकजीवन के विविध रूपों का विवेचन कीजिए।

चंदायन में लोकजीवन के विविध रूपों का विवेचन

'चंदायन' एक महत्वपूर्ण हिंदी काव्य है, जो न केवल प्रेम और विरह की कथा प्रस्तुत करता है, बल्कि इसमें लोकजीवन के विभिन्न रूपों का भी अद्भुत चित्रण किया गया है। इस काव्य की रचना में लोकजीवन की सरलता, संवेदनशीलता और जीवन के संघर्ष को दर्शाया गया है, जो इसे एक अद्वितीय स्थान प्रदान करता है।

1. प्रेम और विरह

'चंदायन' की कहानी मुख्य रूप से प्रेम और विरह के चारों ओर घूमती है। यहाँ प्रेम केवल व्यक्तिगत संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के विभिन्न वर्गों और उनके जीवन के यथार्थ को भी दर्शाता है। प्रेमिका और प्रेमी के बीच का संवाद, उनके मन की स्थितियाँ और समाज में उनके स्थान का वर्णन करते हुए यह काव्य हमें लोकजीवन की गहराई तक पहुँचाता है।

2. ग्रामीण जीवन

काव्य में ग्रामीण जीवन की छवि भी अत्यंत प्रभावशाली है। चंदायन के पात्र ग्रामीण परिवेश में जीते हैं, जहाँ उनकी दिनचर्या, रीति-रिवाज, त्योहार और मेहनत के दृश्य जीवंतता से उभरते हैं। इस ग्रामीण जीवन की सादगी और जटिलताएँ दोनों ही इस काव्य में बखूबी उकेरी गई हैं।

उदाहरण स्वरूप, गाँव के मेले, फसल की कटाई, और प्राकृतिक आपदाओं का सामना करते हुए किसान का संघर्ष, यह सभी तत्व ग्रामीण जीवन को दर्शाते हैं।

3. सामाजिक संरचना

'चंदायन' में सामाजिक संरचना का भी महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ विभिन्न जातियों और वर्गों का वर्णन किया गया है, जो भारतीय समाज की विविधता को दर्शाता है। काव्य में वर्णित पात्र विभिन्न सामाजिक स्तरों से आते हैं, और उनके बीच के रिश्ते और संघर्ष समाज के जटिल ताने-बाने को स्पष्ट करते हैं। इस प्रकार, काव्य में लोकजीवन का यह पहलू सामाजिक समरसता और असमानता दोनों को उजागर करता है।

4. लोकगीत और परंपरा

'चंदायन' में लोकगीतों और परंपराओं का विशेष महत्व है। लोकगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान का माध्यम भी हैं। काव्य में अनेक बार लोकगीतों का उल्लेख किया गया है, जो पात्रों के मनोभावों और उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को उजागर करते हैं। यह काव्य की रचना में लोकजीवन की गहराई को और बढ़ाता है।

5. नैतिक मूल्य

इस काव्य में नैतिक मूल्यों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्रेम, त्याग, और बलिदान जैसे मूल्य लोकजीवन के अभिन्न अंग हैं। पात्रों के निर्णय और उनके कार्य समाज में नैतिकता के विभिन्न आयामों को प्रकट करते हैं। 'चंदायन' के माध्यम से लेखक ने यह संदेश देने का प्रयास किया है कि जीवन में प्रेम और मानवीय संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

6. प्राकृतिक परिवेश

'चंदायन' में प्राकृतिक परिवेश का भी अद्भुत चित्रण किया गया है। प्राकृतिक सौंदर्य, मौसम की विविधताएँ, और इसके प्रभावों का वर्णन लोकजीवन के साथ गहरा संबंध स्थापित करता है। यहाँ प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि यह पात्रों के जीवन और उनके निर्णयों पर सीधा प्रभाव डालती है। यह काव्य हमें यह समझाने में सफल होता है कि मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है।

7. धार्मिकता और आस्था

'चंदायन' में धार्मिकता और आस्था का भी गहरा प्रभाव है। पात्रों की ज़िंदगी में धार्मिक परंपराओं और अनुष्ठानों का स्थान महत्वपूर्ण है। यह काव्य हमें बताता है कि कैसे लोकजीवन में धार्मिकता न केवल आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह समाज के बंधनों को भी मजबूत करती है। ग्रामीण समाज में पूजा-पाठ, त्यौहार और अन्य धार्मिक गतिविधियाँ समुदाय को एकजुट करने का काम करती हैं, जो इस काव्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

8. सांस्कृतिक विविधता

काव्य में भारतीय संस्कृति की विविधता भी प्रमुखता से दर्शाई गई है। विभिन्न जातियों, बोलियों और परंपराओं का समावेश इस काव्य को और अधिक समृद्ध बनाता है। 'चंदायन' में अलग-अलग क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशेषताओं का चित्रण किया गया है, जो न केवल भारत की विविधता को उजागर करता है, बल्कि हमें यह भी सिखाता है कि विभिन्नता में एकता की ताकत कैसे काम करती है।

9. संघर्ष और पराजय

काव्य में संघर्ष का एक महत्वपूर्ण स्थान है। पात्रों को जीवन में विभिन्न प्रकार के संघर्षों का सामना करना पड़ता है—चाहे वह प्रेम का संघर्ष हो, सामाजिक असमानता हो या आर्थिक कठिनाइयाँ। ये संघर्ष केवल पात्रों की व्यक्तिगत कहानियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समाज के व्यापक मुद्दों को भी दर्शाते हैं। 'चंदायन' इस तरह से जीवन की कठिनाइयों को प्रस्तुत करता है कि पाठक स्वयं को उन संघर्षों से जोड़ सके।

10. शिक्षा और जागरूकता

'चंदायन' में शिक्षा का महत्व भी प्रमुखता से दर्शाया गया है। काव्य के पात्र यह समझते हैं कि शिक्षा उनके जीवन को बेहतर बना सकती है। यह दिखाता है कि लोकजीवन में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक बदलाव और जागरूकता का माध्यम भी है। लेखक शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो समाज के हर वर्ग को उन्नति की दिशा में ले जा सकता है।

निष्कर्ष

अंत में, 'चंदायन' एक ऐसा काव्य है जो न केवल प्रेम और विरह की कथा कहता है, बल्कि यह लोकजीवन के अनेक पहलुओं का समृद्ध और गहन विवेचन भी प्रस्तुत करता है। इस काव्य के माध्यम से लेखक ने हमें समाज, संस्कृति, और मानवता की जटिलताओं को समझने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। 'चंदायन' हमें यह सिखाता है कि जीवन में प्रेम, संघर्ष, शिक्षा और सामाजिक समरसता के तत्व कितने महत्वपूर्ण हैं। यह काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक अमूल्य धरोहर है।

(ग) भक्तिकालीन प्रमुख कृष्णभकत कवियों का परिचय दीजिए।

भक्तिकालीन प्रमुख कृष्णभक्त कवियों का परिचय

भक्तिकाल (15वीं से 17वीं सदी) भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण युग था, जिसमें भक्ति की भावना के तहत अनेक संत और कवियों ने धर्म, प्रेम और समाज के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। इस काल में विशेष रूप से कृष्णभक्ति को केंद्रित करके कई कवियों ने अपने काव्य रचनाएँ कीं। यहाँ हम भक्तिकाल के प्रमुख कृष्णभक्त कवियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. सूरदास (1478-1583)

सूरदास, जिन्हें 'कृष्णकृपा' के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, ने भगवान कृष्ण की बाललीलाओं और प्रेम की अनोखी छवियों को प्रस्तुत किया। उनकी रचनाएँ मुख्यतः 'सूरसागर' और 'सूरसागर की पदावली' में संकलित हैं। सूरदास की कविता में भक्ति, प्रेम और विरह की गहरी भावना देखने को मिलती है। उनकी भाषा सरल और भावप्रवण है, जो उन्हें आम जन के करीब लाती है।

2. **मीराबाई (1498-1547)**

मीराबाई, राजस्थानी कवयित्री और कृष्णभक्ति की प्रतीक, ने अपनी रचनाओं में भक्ति और प्रेम के अद्वितीय भाव व्यक्त किए। उनका जीवन संघर्ष और भक्ति का अनूठा उदाहरण है। उन्होंने 'गीतावली', 'भक्ति बोध' और 'पदावली' जैसी रचनाओं के माध्यम से अपनी प्रेम भक्ति को उजागर किया। मीराबाई की कविताएँ उनके अद्वितीय प्रेम, भक्ति और स्वतंत्रता के प्रतीक हैं।

3. **तुलसीदास (1532-1623)**

तुलसीदास, जिन्हें रामभक्त कवि माना जाता है, ने भी भगवान कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त की है। उनकी रचनाएँ 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' में कृष्ण की लीलाओं को प्रेम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास की रचनाएँ भारतीय संस्कृति में गहरी छाप छोड़ चुकी हैं और भक्ति आंदोलन में उनका योगदान अतुलनीय है।

4. **भक्तिन संत कंठा**

भक्तिन संत कंठा ने भगवान कृष्ण की स्तुति में अनेक पद रचे। उनका साहित्य भक्ति, प्रेम और आत्मसमर्पण का प्रतीक है। उनकी रचनाएँ सरल भाषा में होती हैं, जिससे आम जन आसानी से जुड़ते हैं। उनका जीवन भी भक्ति का एक उदाहरण है, जिसने उन्हें समाज में विशिष्ट स्थान दिलाया।

5. **चैतन्य महाप्रभु (1486-1534)**

चैतन्य महाप्रभु एक महान संत और कृष्णभक्त थे। उन्होंने 'गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय' की स्थापना की। उनकी रचनाएँ विशेष रूप से 'श्रीकृष्णचरितामृत' में हैं, जिसमें उन्होंने कृष्ण की लीलाओं और भक्ति के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया। चैतन्य महाप्रभु का भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में एक नया मोड़ दिया।

6. **नंददास (16वीं सदी)**

नंददास ने भगवान कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति को व्यक्त करते हुए 'कृष्णकाव्य' की रचना की। उनकी कविताएँ सहज और सरल हैं, जिनमें भगवान कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है। नंददास की कविताएँ एक गहरी भक्ति भावना के साथ-साथ सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।

7. **राधा-कृष्ण भक्त कवि**

इस युग में राधा और कृष्ण की प्रेम गाथाएँ भी अत्यधिक प्रसिद्ध हुईं। अनेक कवियों ने इस प्रेम को काव्य में उतारा। ये कवि राधा की भक्ति को व्यक्त करते हुए कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को अनूठे ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इन रचनाओं में राधा का प्रेम और कृष्ण की लीलाएँ प्रमुखता से दिखाई देती हैं।

8. **बिहारी (17वीं सदी)**

बिहारी की रचनाएँ मुख्यतः प्रेम और विरह के प्रतीक के रूप में मानी जाती हैं। उन्होंने 'सतकबचन' में कृष्ण की लीलाओं का सुंदर चित्रण किया। बिहारी की कविताएँ श्रृंगारी और गहन भावनाओं से भरी होती हैं, जो पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

निष्कर्ष

भक्तिकालीन कृष्णभक्त कवियों ने भक्ति के माध्यम से समाज में एक नया जागरण लाने का कार्य किया। उनकी रचनाएँ आज भी लोगों के दिलों में गहरी छाप छोड़ती हैं। भक्ति का यह आंदोलन न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी प्रतीक रहा है। इन कवियों की कविताएँ हमें सिखाती हैं कि सच्ची भक्ति और प्रेम से हम समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। कृष्णभक्ति ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया और आज भी यह प्रेरणा का स्रोत है।

3. निम्नलिखित विषयों में से प्रत्येक पर लगभग 200 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(क) श्रमरगीत

श्रमरगीत वे गीत हैं जो श्रमिकों की मेहनत, संघर्ष और जीवन की कठिनाइयों को अभिव्यक्त करते हैं। ये गीत केवल श्रम की महत्ता को ही नहीं, बल्कि श्रमिकों के दर्द और उनके सपनों को भी दर्शाते हैं। भारतीय संस्कृति में श्रमरगीत का विशेष स्थान है, क्योंकि ये हमारे समाज के सबसे निचले तबके के लोगों की आवाज़ बनकर उभरते हैं।

इन गीतों का मुख्य उद्देश्य श्रमिकों के हौसले को बढ़ाना और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। अक्सर श्रम की कठोरता में डूबे श्रमिक अपने दिनभर के काम के बीच इन गीतों को गाते हैं। यह उनके लिए एक प्रकार की मानसिक राहत होती है, जो उन्हें कठिनाइयों का सामना करने की प्रेरणा देती है। श्रमरगीतों में सामूहिकता और एकता का भाव भी होता है, जो श्रमिकों को एकजुट करता है।

श्रमरगीतों के विषय में बात करें तो इनमें खेती, निर्माण, वस्त्र उद्योग, और अन्य श्रमिक गतिविधियों से जुड़े विभिन्न पहलुओं का समावेश होता है। उदाहरण के लिए, किसान अपने खेतों में काम करते समय फसल के प्रति अपनी आशा और चिंता व्यक्त करते हैं। वहीं, निर्माण श्रमिक अपने काम की कठिनाईयों और निर्माण के गर्व को व्यक्त करते हैं।

इन गीतों का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ये केवल वर्तमान की समस्याओं को ही नहीं उठाते, बल्कि भविष्य की उम्मीदों और सपनों को भी उजागर करते हैं। श्रमरगीत हमें यह सिखाते हैं कि मेहनत का फल मीठा होता है और किसी भी कठिनाई का सामना करने का साहस हमें हमेशा रखना चाहिए।

अतः श्रमरगीत हमारे समाज का एक अभिन्न हिस्सा हैं, जो न केवल श्रमिकों के संघर्ष को दर्शाते हैं, बल्कि उनके जीवन की वास्तविकता और उम्मीदों का भी प्रतीक हैं। इन गीतों के माध्यम से हम श्रमिकों की मेहनत और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकते हैं।

(ख) रसखान के काव्य में भक्ति

रसखान, एक प्रसिद्ध सूफी संत और कवि, जिन्होंने अपने काव्य में भक्ति का अद्वितीय चित्रण किया है। वे मूलतः अफगानिस्तान के एक मुसलमान थे, लेकिन कृष्ण भक्ति की ओर आकर्षित होकर उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वृन्दावन में बिता दिया। उनकी काव्य रचनाएँ प्रेम और भक्ति से ओत-प्रोत हैं और उनका भक्ति साहित्य हिंदी साहित्य के भक्ति काव्य धारा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

रसखान की भक्ति का केन्द्रबिन्दु श्रीकृष्ण हैं। वे कृष्ण को अपने आराध्य मानते हैं और उनके प्रति अपनी अनन्य भक्ति को अपने काव्य में व्यक्त करते हैं। उनकी रचनाओं में कृष्ण की लीला, उनके रूप, उनकी बाल लीलाओं का वर्णन और वृन्दावन की महिमा का गान प्रमुखता से मिलता है। रसखान का काव्य सगुण भक्ति की परम्परा में आता है, जिसमें ईश्वर को सगुण रूप में पूजा जाता है।

रसखान के काव्य में भक्ति की गहराई को उनकी एक प्रसिद्ध कविता से समझा जा सकता है:

"मानुष हौं तो वही रसखान,

बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पशु हौं तो कहा बस मेरो,

चरो नित नंद की धेनु मंझारन।"

इस कविता में रसखान की गहरी भक्ति स्पष्ट रूप से झलकती है। वे कहते हैं कि यदि वे मनुष्य रूप में हों, तो ब्रज में रहना चाहते हैं, और यदि पशु हों, तो नंद बाबा की गायों के साथ रहना चाहते हैं। इस प्रकार, वे हर रूप में श्रीकृष्ण की भक्ति करना चाहते हैं।

रसखान का भक्ति भाव इतना गहरा था कि उन्होंने धर्म, जाति और सामाजिक बंधनों को त्यागकर अपनी संपूर्ण निष्ठा श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित कर दी। उनकी भक्ति केवल शब्दों में नहीं, बल्कि उनकी जीवन शैली में भी प्रकट होती थी। उन्होंने अपना जीवन वृन्दावन में बिताया, जहाँ उन्होंने श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन होकर अपनी रचनाओं को आकार दिया।

रसखान की भक्ति का एक और महत्वपूर्ण पहलू उनका समर्पण भाव है। उनकी कविताओं में कृष्ण के प्रति उनकी निःस्वार्थ भक्ति और समर्पण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते समय अपने भावनाओं को इतनी सहजता और गहराई से व्यक्त करते हैं कि पाठक भी उन भावनाओं में बह जाता है।

अंततः, रसखान का काव्य भक्ति की अनूठी मिसाल है, जिसमें कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम और समर्पण की भावना प्रकट होती है। उनकी रचनाएँ भक्ति काव्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं

और उनकी भक्ति की गहराई और सच्चाई आज भी पाठकों को प्रेरित करती है। उनके काव्य में भक्ति का यह अद्वितीय स्वरूप हिंदी साहित्य के भक्ति युग में एक अनमोल धरोहर के रूप में सजीव है।

(ग) रविदास के काव्य में 'जीव' का स्वरूप

रविदास, 15वीं सदी के एक महान संत-कवि, अपने काव्य में जीव का अद्वितीय स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। उनके काव्य में 'जीव' का अर्थ जीवात्मा या आत्मा से है, जो ईश्वर का अंश है और जिसे मुक्ति की प्राप्ति हेतु मानव जीवन मिला है। रविदास के काव्य में जीव का स्वरूप गहन आध्यात्मिकता, सरलता और ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति से परिपूर्ण है।

रविदास के अनुसार, जीव ईश्वर का अंश है और उसकी वास्तविकता को पहचानने के लिए आध्यात्मिक जागरूकता आवश्यक है। उनके काव्य में यह स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक जीव में ईश्वर का निवास है और उसे पहचानने के लिए हमें अपने भीतर की दिव्यता को समझना होगा। रविदास कहते हैं:

"मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

इस दोहे में, वे बताते हैं कि यदि मन शुद्ध है, तो हमारे आस-पास का संसार भी पवित्र हो जाता है। जीव की शुद्धि और उसकी आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग मन की शुद्धि में निहित है।

रविदास के काव्य में जीव की महत्वता और उसकी स्वतंत्रता पर भी बल दिया गया है। उनके अनुसार, प्रत्येक जीव स्वतंत्र है और उसे अपने कर्मों के आधार पर अपने जीवन का मार्ग चुनने का अधिकार है। वे मानव जीवन को एक अनमोल अवसर मानते हैं, जिसमें जीव को अपने सच्चे स्वरूप को पहचानने और ईश्वर की भक्ति में लीन होने का मौका मिलता है।

रविदास के काव्य में भक्ति और मुक्ति का संबंध भी जीव के स्वरूप से जुड़ा है। उनके अनुसार, जीव की मुक्ति केवल ईश्वर की भक्ति और उसके प्रति अनन्य प्रेम से ही संभव है। वे कहते हैं:

"प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी,

जाकी अंग-अंग बास समानी।"

इस पंक्ति में, रविदास जीव और ईश्वर के बीच के संबंध को स्पष्ट करते हैं। वे बताते हैं कि जैसे चंदन और पानी का मिलन होता है, वैसे ही जीव और ईश्वर का मिलन भी भक्ति और प्रेम के माध्यम से होता है।

अंततः, रविदास के काव्य में जीव का स्वरूप अत्यंत आध्यात्मिक और भक्ति-प्रधान है। उनके काव्य में जीव की शुद्धि, स्वतंत्रता, और ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति का महत्व स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, जो आज भी उनके अनुयायियों और पाठकों को प्रेरित करता है।